अधखुले ओंठों में बंद अरमान - निम्मी

जन्म - 18 फ़रवरी, 1933

कमनीय काया, ठिगना कद, गोल चेहरा, घुँघराले बाल, उनींदी-स्वप्निल आँखें, कमान की तरह तराशी गई भौंहें, पल-पल झलकती पलकें – ये सब सौंदर्य विशेषण गुजरे जमाने की अभिनेत्री निम्मी के लिए व्यक्त किये जाते हैं। इन विशेषताओं को देखकर हर दर्शक मासूम निम्मी को मुग्ध-भाव देखता था। नाम भी निम्मी जो निमेष (पलकों) से ध्वनि-साम्य रखने वाला। उनका वास्तविक नाम तो नवाब बानो था, लेकिन युवा राजकपूर ने उन्हें अपनी फिल्म 'बरसात' (1949) में पेश करते हुए निम्मी बना दिया था।

निम्मी का जन्म 1933 में आगरा के निकट फतेहाबाद गाँव में एक रईस खानदान में हुआ था। उनके पिता अब्दुल हाकिम रावलपिण्ड़ी में सेना के ठेकेदार थे। निम्मी को बचपन में बहुत लाड़ प्यार मिला। उनकी माँ वहीदन बाई गायिका थीं और बड़े शौक से फिल्मों में छोटे-मोटे रोल किया करती थीं। चाची ज्योति भी फिल्म में गायन और अभिनय करती थीं। सन् 47 के आसपास निम्मी चौदह साल की उम्र में अपनी चाची ज्योति के घर पहुँची। छुट्टियों के दिन थे। समय बिताने के लिए निम्मी मेहबूब स्टूडियो में जाकर शूटिंग देखा करती। उन दिनों मेहबूब दिलीपकुमार, राजकपूर और नरगिस को लेकर अपनी प्रसिद्ध फिल्म 'अंदाज' बना रहे थे। यहीं राजकपूर ने, जो स्वयं भी 'बरसात' बनाने की तैयारियों में लगे थे, निम्मी को नजदीक से देखा।

फिल्म आन (1952) के प्रिमियर शो पर निम्मी जब लदंन गई, तो वहाँ के अखबारों ने उसे 'अनकिरन्ड गर्ल ऑफ इंड़ियन स्क्रीन' जैसे संबोधन से पुकारा।

निम्मी की पहली फिल्म बरसात थी, जो सुपर हिट थी। 'बरसात' में निम्मी पर शीर्षक-गीत 'बरसात में हम से मिले तुम रे सजन' और 'हवा में उड़ता जाये' फिल्माया गया था। इसके बाद निम्मी को पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ी।

दिलीपकुमार के साथ उन्होंने 'दीदार' (51), 'आन' एवं 'दाग' (52) 'अमर' (54) और 'उड़न-खटोला' (55) में काम किया।

राजकपूर को बरसात के ट्रैजिक राल के लिए निम्मी जँच गई, इसलिए निम्मी को बड़ी आसानी से फिल्मों में प्रवेश मिल गया। 'बरसात' में निम्मी पर शीर्षक-गीत 'बरसात में हम से मिले तुम रे सजन' फिल्माया गया था, जो लता मंगेशवर के जादू का शुरुआती गाना था, इसलिए भी निम्मी अपनी पहली ही फिल्म से एकदम लाइम-लाइट में आ गई। बरसात के बाद निम्मी को पीछे मुड़कर देखने की जरूरत नहीं पड़ी। उनकी अभिनय यात्रा निरापद रही। उस जमाने की भावनाप्रधान फिल्मों के लिए निम्मी एकदम उपयुक्त थीं, क्योंकि उनका सलोना मुखड़ा भावाभिव्यक्ति का खज़ाना था। कैमरे का सामने वे नैसर्गिक रूप से पात्र की काया में उतर जातीं और फटाफट काम पूरा कर देतीं।

अपने सोलह साल के करियर में निम्मी ने 45 फिल्में कीं, जिनमें से आधी कामयाब रहीं। निम्मी ने अभिनय का कहीं कोई प्रशिक्षण नहीं लिया था, लेकिन उर्दू पर उनकी अच्छी पकड़ होने से संवाद अदायगी साफ और लयात्मक थी। उसमें सेकस-अपील भी थी, जबकि उस समय फिल्मी-आलोचना में इस तरह का शब्दों का इस्तेमाल नहीं होता था। 'आन' फिल्म के लंदन में प्रीमियर के अवसर पर वहाँ के अखबारों ने उसे 'अनकिस्ड-गर्ल ऑफ इंडियन स्क्रीन' लिखा था। निम्मी ने अपने दौर में सभी बड़े अभिनेताओं के साथ काम किया। वह सीन को अपनी दिशा में मोड़ने में माहिर थी, इसलिए कुछ कलाकार उनके साथ काम

करने से घबराते भी थे।

दिलीपकुमार के साथ उन्होंने 'दीदार' (51), 'आन' एवं 'दाग' (52) 'अमर' (54) और 'उड़न-खटोला' (55) में काम किया। 'बुजदिल', 'सजा' और 'आँधियाँ' में वे देवआनंद की नायिका रही। आँधियाँ फिल्म कॉन फेल्टिवल में दिखाई गई थी। चेतन आनंद द्वारा बुद्ध के जीवन पर बनाई गई फिल्म 'अंजलि' में भी वे थीं। अशोककुमार और किशोरकुमार के साथ 'भाई-भाई' (56) में आई। उन्हें सोहराब मोदी, जयराज, भारतभूषण, राजकुमार, राजेन्द्रकुमार, संजीवकुमार और धर्मेंद्र के साथ फिल्में करने के अवसर भी हाथ लगे। 'बसंत-बहार' और 'चार दिल चार राहें' भी उनकी उल्लेखनीय फिल्में हैं। 'मेरे मेहबूब' (1963) उनकी अंतिम फिल्म थी। उसके बाद उन्होंने फिल्मों से संन्यास की घोषणा कर दी। संवाद लेखक अली रजा से विवाह के बाद वे माँ बनना चाहती थी, लेकिन यह मुराद पूरी नहीं हुई।

सन् 1987 में के.आसिफ की फिल्म 'लव एंड गॉड' में दर्शकों ने उन्हें अंतिम बार परदे पर देखा। यह फिल्म आसिफ अधूरी छोड़ गए थे, जो उनके निधन के पश्चात प्रदर्शित की गई।

लेखक

श्रीराम ताम्रकर
एम.ए., बी.एड., विद्यावाचस्पति,
विशारद, एफ.ए. (FTII)
इन्दौर, म.प्र.
'बीते कल के सितारे' पुस्तक से